Indian J. Soc. & Pol. 04(03):2017 :139-140 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
Special Print Issue 2017 **UGC Journal List No 47956**

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में लोक प्रशासन पर वैश्वीकरण का प्रभाव

उदयभान[1]

[1]गेस्ट फैकल्टी,राजनीति विज्ञान विभाग,इलाहाबाद विश्वविद्यालय,इलाहाबाद,उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

मानव सभ्यता के आरम्भ से लेकर आज तक लोक प्रशासन, राज्य एवं सरकार अपने आपको उत्कृष्टता की ओर अग्रसारित करते रहे हैं जिसके फलस्वरूप तीनों की प्रकृति में अभूतपूर्व परिवर्तन होते रहे हैं। सभ्यता के आरम्भ में कबीला राज्य, बाद में समाज केन्द्रित राज्य हुआ करते थे। समय व परिस्थितियों में परिवर्तन व राज्य सम्बन्धी विचारधारा में बदलाव के कारण पुलिस राज्य का उदय हुआ जो कि धीरे–धीरे लोक कल्याणकारी राज्य में परिवर्तित हो गये। इसके साथ बदलाव का दौर समाप्त नहीं हुआ और जन अपेक्षाओं के अनुरूप प्रशासनिक राज्य की अवधारणा को 20वीं सदी के अन्त में मान्यता प्राप्त हुई। ब्रिटेन ने माग्रेट थैचर, संयुक्त राज्य में रोनाल्ड रीगन व केनेडा में मैलरोनी के प्रयत्नों से लोक कल्याणकारी राज्य, प्रशासनिक राज्य में परिवर्तित हुआ। सोवियत संघ के विघटन व एकल ध्रुवीय व्यवस्था के उदय ने इस अवधारणा को प्रभावित किया। जिसके फलस्वरूप विभिन्न नई अवधारणाओं में क्रमशः नवलोक प्रबन्धन, नव टेलरवाद के उदय ने लोक प्रशासन पर प्रभाव छोड़ा। साथ ही 1991 में ही उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण का प्रभाव विश्व के सभी देशों (विशेषतः विकासशील देशों) व लोक प्रशासन पर पड़ना शुरू हुआ, जिसके फलस्वरूप उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के लोक प्रशासन पर प्रभाव का चिंतन करना आवश्यक हो गया।

KEY WORDS: *लोक प्रशासन, नव प्रबंधन, वैश्वीकरण, उदारीकरण, लोक कल्याणकारिता*

विकासशील देशों में विकास मूलतः एक लोकप्रिय एवं लगातार चलती रहने वाली प्रक्रिया है, विकास को संतुलित रूप से जारी रखने में शासन की नीतियों और प्रशासन की महती भूमिका होती है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में राज्य, विकास और लोक प्रशासन तीनों को ही वैश्वीकरण ने प्रभावित किया है। विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों की शासन व्यवस्था में विकास को बढ़ाने हेतु नौकरशाही का आकार और भूमिका को धीरे–धीरे बढ़ाया गया था, लेकिन वैश्वीकरण में पुर्नविचार के दौर में राज्य और लोक प्रशासन की भूमिका पर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुर्नविचार की स्थिति बन गयी है। 'लोक प्रशासन के समक्ष वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौती राज्य सरकारों की आधुनिक चुनौतियाँ हैं, ये चुनौतियाँ वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण है।(http.eewww,2huwai.eduen glop.htm on dated 14.06.12.) राज्य एवं विकास के परिप्रेक्ष्य में लोक प्रशासन का महत्व तो बढ़ गया है किन्तु ''वैश्वीकरण के चलते उसकी लोक कल्याणकारी विशेषताओं को चुनौती मिल रही है और लोक सुरक्षा की अवधारणा में भी बदलावा आया है।''(विसलान, 2004 पृ0281.296) एक ओर जहाँ राज्य अपने आपको कल्याणकारी राज्य के रूप में स्थापित करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर वैश्वीकरण राज्य को पुनः नियामकीय राज्य की भूमिका में देखना चाहता है, तब इस सन्दर्भ में विकासशील देशों के परिप्रेक्ष्य में दो रूझान सामने आते हैं। प्रथम, बाजार अर्थव्यवस्था के उदय के कारण राज्य व प्रशासन की भूमिका में परिवर्तन द्वितीय, प्रशासन के परिप्रेक्ष्य में नई (बहुलवादी) विचारधाराओं का उदय।

विकसित देशोंकी लोकतांत्रिक व्यवस्था की पश्चिमी संस्कृति व उसके मूल्यों ने आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विकासशील देशों की व्यवस्था पर एक दबाव बना दिया है। विकासशील देशों में मूलभूत संरचनात्मक विकास को बढ़ाने की प्रतिस्पर्धा है, जिसके परिणामस्वरूप विकासशील देशों पर उन पूँजीवादी नीतियों को लागू करने का दबाव है जिन पर चलकर लोक कल्याणकारी विशेषताओं को बनाये नहीं रखा जा सकता है। जिसके परिणामस्वरूप राज्य मूलतः कल्याणकारी पद्धति के साथ नियामकीय विशेषताओं को अपना रहा है। राज्य अपना ध्यान उत्पादक गतिविधियों से हटाकर, सामाजिक व आधारभूत सेवाएँ प्रदान करने में लगा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान में राज्य का रुझान विकेन्द्रीकरण की नूतन विशेषताएँ और स्थानीय प्रशासन के सबलीकरण की ओर बढ़ गया है। इस संदर्भ में लोक प्रशासन के विभिन्न विद्वानों ने यह तर्क दिया कि अब राज्य, लोक प्रशासन व विकास तीनों की भूमिका के परिप्रेक्ष्य में पुर्नमूल्यांकन की स्थिति बन गयी है, इसी परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण, बाजार व्यवस्था के सन्दर्भ में एक विद्वान जेम्स स्टीवर ने अपनी पुस्तक दी एण्ड ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में ''राज्य व प्रशासन की समाप्ति की भी घोषणा कर दी और राज्य के सभी कार्यों को बाजार व्यवस्था पर छोड़ने का सुझाव दिया।''(स्टीवर,1988 पृ066) राज्य की समाप्ति की भविष्यवाणी सबसे पहले मार्क्सवादियों के अनुसरणकर्ताओं द्वारा की गयी थी इसी सन्दर्भ में लेनिन की पुस्तक ''साम्राज्यवाद पूँजीवाद का उच्चतम स्तर'' में बहुराष्ट्रीय निगमों के विकास व भूमिका पर बल दिया गया था, जिसके फलस्वरूप राज्य इन

1:Corresponding Author

बहुराष्ट्रीय नियमों के हितों की रक्षा करता है तथा उनकी नीतिगत मदद कर उन्हें मजबूत बनाने का सुझाव देता है इसी सन्दर्भ में अन्य विद्वान एक नई प्रबन्धन व्यवस्था के उदय की बात करते हैं जिससे मुख्यरूप से स्कोल्ट यह पक्ष रखते हैं कि ''वैश्वीकरण के दौर में भी लोक प्रशासन व राष्ट्र–राज्य बना रहेगा।''(स्काल्ट,1997 पृ0427.452) विद्वान जिसमेन के अनुसार वैश्वीकरण की अवधारणा के व्यापक रूप से लागू होने के पश्चात भी राज्य व प्रशासन सुदृढ़ बना रहेगा। इस संदर्भ में प्रो0 रजनी कोठारी ने कहा कि ''एक ओर राज्य का सामाजिक बदलाव के रूप में ह्रास हो रहा है दूसरी ओर अन्य वैश्विक राजनीतिक संस्थाओं का उदय हो रहा है। ये संस्थाएँ आने वाले समय में संभावनाओं के रूप में देखी जा रही है।(कोठारी,1996 पृ01596) जबकि एक अन्य विचारक बलदेव राज नायर बताते हैं कि 'वैश्वीकरण के दौर में बढ़ते कार्यों के कारण राज्य के संकुचित स्वरूप का उभरना गत अवधारणा है बल्कि वैश्वीकरण के कारण राज्य नामक संस्था के कार्यों में वृद्धि संभावित है''(नायर,2009 पृ0286) विद्युत चक्रवर्ती एवं मोहित भट्टाचार्य के अनुसार ''वैश्वीकरण के चलते विकसित व विकासशील देशों के लोक प्रशासन में बहुत बदलाव हुए हैं अधिकतर राष्ट्रों का रुझान नव लोक प्रबन्धन की ओर बढ़ा है। लोक संस्थाएँ प्रक्रिया उन्मुख से परिणामोन्मुख हो गयी हैं।(चक्रवर्ती, 2003 पृ020) अतः वैश्वीकरण की अवधारणा लागू होने के पश्चात सामान्यतः तीन महत्वपूर्ण रुझान सामने आते हैं। प्रथम–विद्वानों का एक समूह राज्य की समाप्ति अर्थात् राज्य एवं लोक प्रशासन के कार्यो में पतन की बात कर रहा है। दूसरा–विद्वानों का समूह राज्य व लोक प्रशासन के कार्यों की सुदृढता की बात कर रहा है। तीसरा– रुझान अधिक महत्वपूर्ण है जो सीमित राज्य की अवधारणा को नकारते हुए वैश्वीकरण के चलते नियामकीय राज्य की स्थिति को स्वीकार करता है। फ्रेड डब्लू रिग्ज ने बताया कि 'लोक प्रशासन एवं वैश्वीकरण के अध्ययन के क्षेत्र में तीन बातों का मूलतः अध्ययन किया जा सकता है''।

- प्रशासन एवं विकास
- प्रशासकीय सुधार एवं आधुनिकता
- लोक प्रशासन व प्रजातंत्र।

इस तरह से निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में लोक प्रशासन पर वैश्वीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ा है, जो निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

सन्दर्भ

रिग्स, एफ0डब्लू0, ग्लोबलाइजेशन एण्ड पब्लिक एडमिनिस्ट्रेन, http.eewww,2huwai.eduen glop.htm on dated 14.06.12.

बिसलॉन, सेवेन, ग्लोबलाइजेशन स्टेट टांस्फामेशन एण्ड पब्लिक सिक्योरिटी, *इंटरनेशनल पालिटिकल साइंस रिव्यू,* जुलाई, 2004, वा 25

स्टीवर, जेम्स, (1988) *द एण्ड आफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन,* न्यूयार्क, ट्रांजीसनल पब्लिकेशन,

स्काल्ट, जे0ए0,(1997) ग्लोबल केपिटिलिज्म एण्ड द स्टेट, *इंटरनेशनल अफेयर्स,* वा0 73, नं0 3,

कोठारी, रजनी,(1996) अंडर द ग्लोबलाइजेशन विल नेशन स्टेट होल्ड, *इकोनॉमिक पालिटीकल वीकली,* जुलाई 1996,

नायर, बलदेव राज,(2009) *द मिथ आफ सिंकिंग स्टेटः 'ग्लोबलाइजेशन एण्ड स्टेट ऑफ इण्डिया,* आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस,

चक्रवर्ती विद्युत एवं भट्टाचार्य मोहित (2003) *पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन* (पुस्तक की प्रवेशिका से) नई दिल्ली, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस,